IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Volume 1, Issue 2, September 2021

Impact Factor: 5.731

पं. दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों एवं शैक्षिक प्रारूप की वर्तमान भारतीय परिवेश में उपादेयता

डॉ. गीतू गुप्ता व डॉ. युद्धवीर सिंह

विभागाध्यक्ष, स्ववित्तपोषित बी. एड., स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थान सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय, नैनीडांडा, पौड़ी गढ़वाल

प्राचार्य, कुकरेजा इन्स्टीट्यूट ऑफ टीचर एजूकेशन, देहरादून

सारांश

विभिन्न समाजों के विभिन्न समूह समय–समय पर अपनी शिक्षा के स्वरूप को प्रभावित करते रहे हैं और उसी आधार पर देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया जाता रहा है। पं0 दीनदयाल भारत की परिस्थितियों से पूर्णतया अवगत थे और उन्होंने भारत की आवश्यकता के अनुरूप ही शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया है। पं0 दीनदयाल जी के पाठ्यचर्या में प्राचीन व नवीन तथा वैज्ञानिक व दार्शनिक विषयों का संकलन है जिसकी वर्तमान समय में निरन्तर आवश्यकता बनी है। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य न केवल बालक का बौद्धिक विकास करना है अपितु उसका शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास करना भी है जो विभिन्न प्राचीन एवं नवीन शिक्षण पद्धतियों में समन्वय स्थापित कर ही प्राप्त किया जा सकता है। दीनदयाल जी के मतानुसार शिक्षकों व शिक्षार्थियों के मध्य परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिये। पण्डित जी ने अनुशासन को महत्व देते हंये बालकों में स्वानुशासन एवं आत्मानुशासन को आवश्यक बताया है। उनके द्वारा प्रतिपादित विद्यालय सम्बन्धी विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने गुरुगृह में रहकर व्यवस्था पूर्वक बालकों को शिक्षित करने की बात कही है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को ही स्वीकार किया है साथ ही उन्होंने वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान के लिये अंग्रेजी भाषा व साहित्य के ज्ञान के लिये क्षेत्रीय भाषा को महत्व दिया है। पण्डित जी ने जनशिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा एवं स्त्रीशिक्षा एवं एकात्ममानववादी विचारों की शिक्षा स्वीकार की है।

संकेत शब्द – उपादेयता, पाठ्यचर्या, शिक्षण–विधियाँ, शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध, विद्यालय, जनशिक्षा, स्त्रीशिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा

प्रस्तावना – समाज का शिक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध है और समाज ही शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन है। चूंकि समाज अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है। इसलिए समाज ही शिक्षा का मुख्य आधार है। ध्यान देने की बात है कि भारतीय समाज विभिन्न समूहों, जातियों तथा वर्गों में विभाजित है उक्त सभी समूहों ने भारतीय शिक्षा के रूप को प्राचीन काल से लेकर अब तक प्रभावित करके भारतीय बालकों को किसी न किसी प्रकार शिक्षा प्रदान करने में सहयोग प्रदान किया है। विभिन्न समाजों के विभिन्न समूह समय–समय पर अपनी शिक्षा के स्वरूप को प्रभावित करते रहे हैं और उसी आधार पर देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया जाता रहा है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जैसा समाज होगा वैसी ही शिक्षा होगी। मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही हमारा देश अपने दर्शन और शिक्षा के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह सब शिक्षा के लक्ष्यों और उद्देश्यों का ही चमत्कार है कि भारतीय संस्कृति ने सदैव विश्व के सभी देशों को सदाचार का मार्ग दिखाया और आज भी जीवित एवं सक्रिय है। वर्तमान युग में भी हमारे शिक्षा शास्त्री हमारे देश की शिक्षा पद्धति की इस प्रकार से व्यवस्था करने की पूरी कोशिश कर रहें हैं जिससे हमारी संस्कृति का प्रगतिशील विकास होता रहे।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 1, Issue 2, September 2021
Impact Factor: 5.731

भारत में प्रत्येक युग की शिक्षा के उद्देश्य अलग–अलग रहे हैं उदाहरण के तौर पर यदि प्राचीन भारत की शिक्षा से आज तक की वर्तमान शिक्षा को देखें तो पता चलता है कि निरन्तर सामाजिक आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जाता रहा है। यह निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट हो सकता है– प्राचीन भारत में शिक्षा का आदर्शवादी और धार्मिक रूप था। जिसमें (1.) ईश्वर की उपासना, (2.) धार्मिकता, (3.) आध्यात्मिकता, (4.) चरित्र निर्माण, (5.) संस्कृति, (6.) राष्ट्र व समाज के विकास के लिए रूचि उत्पन्न करने पर बल दिया जाता था। आधुनिक शिक्षाशास्त्री निरन्तर सामाजिक आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, व अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षा के उद्देश्यों व शिक्षा के स्वरूप में वर्तमान उपयोगिता को ध्यान में रखते हुये परिवर्तन करने के लिये प्रयासरत हैं। विभिन्न विद्वानों ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता को दृष्टिगत रखते हुये तथा भारतीय समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये शिक्षा के प्रारूप का निर्धारण किया है। हम लोंगो की आवश्यकताओं तथा आशाओं की ओर विशेष ध्यान देते हुये शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण होना चाहिये। चूंकि देश की आवश्यकताएँ समय–समय पर बदलती रहती हैं इसलिए शिक्षा को उनके अनुसार ढालना चाहिये। इस समय सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियाँ बहुत तेजी से बदल रही हैं और नई–नई समस्यायें पैदा हो रहीं हैं। इसलिये आधुनिक भारत में शिक्षा के प्रारूप पर नये सिरे से विचार करने और परखने की आवश्यकता अनुभव हो रही है। पंडित जी का मानना था कि शिक्षा और विचारधाराओं द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को समाजनिष्ठ बनाया जाये। उनको सब स्थितियों से एवं आवश्यकताओं से परिचित कराया जाए। तभी भारत की उन्नति सम्भव है। जब भी इस दिशा में विचार हो, भारतीय संस्कृति को आधारशिला मानकर चलें, पश्चिमी सभ्यता को नहीं, जैसा कि वर्तमान में हो रहा है। भारतीय विचारकों में दयानंद, अरविन्द घोष, रविन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानन्द, मालवीय जी, जवाहरलाल नेहरु, पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने अपने–अपने समय में शिक्षा के स्वरूप व उसकी व्याख्या पर चर्चा की है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक प्रारूप की वर्तमान भारतीय शिक्षा में उपादेयता निम्नप्रकार से दृष्टिगत होती है।

वर्तमान समय निरन्तर परिवर्तन का काल है। आज की परिस्थितियों में निरन्तर समाज की आवश्यकतायें बदल रहीं हैं और साथ ही उनके विचार करने व जीवन जीने के तरीकों में परिवर्तन हो रहा है। पं0 दीनदयाल भारत की परिस्थितियों से पूर्णतया अवगत थे और उन्होंने भारत की आवश्यकता के अनुरूप ही शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया है। आज निरन्तर आधुनिकीकरण की ओर बढ़ते हुये भारत की अपनी संस्कृति का ह्रास हो रहा है, लोगों के जीवन मूल्यों में परिवर्तन होने लगा है। आज प्रयोजनवादिता के चलते उपयोगिता को महत्व दिया जा रहा है जिससे लोंगो में आचरण, नैतिकता, सांस्कृतिक, सामाजिकता तथा कुशल नेतृत्व की कमी होती जा रही है जिसके लिये पं0 दीनदयाल ने अपने शिक्षा के उद्देश्यों में इनके बढ़ावे अर्थात् लोंगो में आपसी सामाजिक सहयोग, नैतिक व चारित्रिक विकास, राष्ट्रीयता की भावना का विकास तथा मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के लिए चार पुरूषार्थों यथा – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति एवं जीवन मूल्यों के उचित विकास, उत्पादनशीलता में विकास व सहयोग, पर बल दिया है जो कि वर्तमान समय की माँग भी है और आवश्यकता भी।

पाठ्यचर्या की उपादेयता – पण्डित जी व्यक्ति को लौकिक तथा पारलौकिक दोंनो प्रकार के जीवन के लिए तैयार करना चाहते हैं अतः उनकी शिक्षा व्यवस्था में इन दोंनो का सामंजस्य देखने को मिलता है। आधुनिकीकरण के इस युग में व्यक्ति भौतिकवादी हो रहे हैं, व्यक्ति अपने सुख की अत्यधिक लालसा से युक्त हो रहा है अतः अधिक से अधिक साधन सम्पन्न होना चाह रहा है और आत्मिक शांति से दूर होता जा रहा है इस स्थिति में पं0 दीनदयाल जी द्वारा दिखाये पाठ्यक्रम में बालक की भौतिक उन्नति के साथ–साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिये भी विषयों का चयन किया गया है। पं0 दीनदयाल जी के पाठ्यचर्या में प्राचीन व नवीन तथा वैज्ञानिक व दार्शनिक विषयों का संकलन है जिसकी वर्तमान समय में निरन्तर आवश्यकता बनी है। उनके द्वारा गठित पाठ्यचर्या में व्यक्ति की भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति को ध्यान में रखा गया है और आज के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम लचीला व परिवर्तनशील होना जिससे वर्तमान की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति की जा सके। समाज के

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 1, Issue 2, September 2021
Impact Factor: 5.731

परिवर्तित आवश्यकताओं के अनुरूप ही पं0 दीनदयाल जी ने पाठ्यक्रम की रचना की है जो आज की भारतीय परिस्थितियों में उपयोगी व मूल्यपरक शैक्षिक व्यवस्था में सहायक है। आज का समय केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है आज बालक की रूचि व योग्यता के अनुसार उसके लिये व्यवसाय परक शिक्षा को चुनने की स्वतन्त्रता है जो उसकी प्रतिभा या कौशल पर आधारित हो अतः पण्डित जी ने सहगामी क्रियाओं को भी पाठ्यचर्या का अंग बनाया है जो वर्तमान में अति महत्वपूर्ण है।

शिक्षण विधियों की उपादेयता – पण्डित जी के अनुसार अध्यापन वह क्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति अपने अनुभवों व ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाने का कार्य करता है उसके लिये वह किसी निश्चित औपचारिक साधन को ही नहीं स्वीकार करते अपितु अनौपचारिक रूप से भी शिक्षा विभिन्न साधनों से व क्रियाओं से प्राप्त कराई जा सकती है। इसके लिये उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुये प्राचीन शिक्षण विधियों यथा–स्वाध्याय-विधि, व्याख्यान-विधि, वार्तालाप-विधि को महत्व दिया है और साथ ही वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था को अधिक महत्व देते हुये वाद-विवाद विधि, प्रश्नोत्तर-विधि, क्रिया-विधि व रचनात्मक क्रिया-विधि एवं प्रयोग-विधि को शैक्षिक योजना में स्थान दिया जोकि वर्तमान भारतीय समाज में बालक को अधिक ज्ञान प्राप्त कराने और क्रियाशील रखने के लिये जरूरी है। इसके साथ ही पण्डित जी ने निरन्तर अभ्यास, एकान्त चिन्तन तथा ध्यान को भी आवश्यक बताया है जिससे बालक को स्थायी ज्ञान प्राप्त हो सके। पण्डित जी ने बालक के स्वक्रिया द्वारा तथा अनौपचारिक माध्यमों से अनुभवों को ग्रहण करने को भी महत्व दिया जिससे वर्तमान भारतीय परिस्थितियों में समाज सेवा तथा बन्धुत्व की भावना को बल मिल सके। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य न केवल बालक का बौद्धिक विकास करना है अपितु उसका शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास करना भी है जो विभिन्न प्राचीन एवं नवीन शिक्षण पद्धतियों में समन्वय स्थापित कर ही प्राप्त किया जा सकता है।

अनुशासन की उपादेयता – वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता चाहता है और उसके लिये वह किसी भी प्रकार के बन्धन स्वीकार नहीं करना चाहता किन्तु व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास के लिये सामाजिक बन्धनों का होना अनिवार्य है, उसी के लिये उपाध्याय जी ने सभी को यथा– शिक्षक एवं शिक्षार्थी को अनुशासन में रखने की बात कही है। उनके अनुसार बालक के विकास के लिये जरूरी है कि उसे अनुशासन में रहना सिखाया जाये उसके लिये उसे स्वानुशासित होकर रहने के लिये प्रेरित किया जाना आवश्यक है। अतः पण्डित जी ने अनुशासन को महत्व देते हंये बालकों में स्वानुशासन एवं आत्मानुशासन को आवश्यक बताया है और उनका यह विचार आज के सन्दर्भ में भी उचित प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान पीढ़ी निरन्तर स्वच्छन्दता प्राप्त कर अपने जीवन उद्देश्यों से भटक रही है और अपना व समाज का नुकसान कर रही है। अतः वर्तमान समय में बालकों के विकास व उचित दिशा में बढ़ने के लिये प्रेरित करने हेतु उनमें आत्मानुशासन की भावना को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। उनके द्वारा प्रतिपादित आत्मानुशासन बालक के लिये अधिक उपयोगी है क्योंकि बाह्य दण्ड जिसका कि उन्होंने खण्डन किया है, इतना प्रभावशाली नहीं होता जितनी की व्यक्ति की आत्मिक प्रेरणा अर्थात् आत्मानुशासन।

शिक्षक– शिक्षार्थी सम्बन्धों की उपादेयता – प्राचीन काल में शिक्षक को आध्यात्मिक पुंज माना जाता था और शिक्षार्थियों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने शिक्षक द्वारा दिखाये मार्ग का अनुसरण करें व अपने शिक्षार्थी कर्तव्यों का निष्ठा से निर्वहन करें किन्तु आधुनिक समय में शिक्षक व शिक्षार्थी सम्बन्धों में मधुरता व अपनत्व का अभाव दिखता है अतः पण्डित दीनदयाल जी के मतानुसार शिक्षकों व शिक्षार्थियों के मध्य परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिये। आज के शिक्षार्थियों को अपने गुरुजनों के प्रति कर्तव्यनिष्ठ व निष्ठावान बनाने पर बल दिया जाना चाहिये। साथ ही शिक्षकों में भी अपने विद्यार्थियों के लिये अपनत्व, प्रेम व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार होना चाहिये। उपाध्याय जी के विचार आज शिक्षक व शिक्षार्थियों के सम्बन्धों को नयापन देने व परस्पर

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 1, Issue 2, September 2021
Impact Factor: 5.731

सहयोगी एवं प्रेमपूर्ण बनाने के लिये उपयोगी हैं। आज शिक्षा की धुरी विद्यार्थी के चारों ओर घूमती है उसकी रुचि, योग्यता व सक्षमता को बढ़ावा दिया जाता है अतः शिक्षकों व शिक्षार्थियों के सम्बन्धों में उच्च कोटि का सामंजस्य व कर्तव्यनिष्ठता तथा जिम्मेदारी का होना आवश्यक है। आज की शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दीनदयाल जी द्वारा दिखाये शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धी विचार अत्यन्त उपयोगी हैं।

विद्यालय की उपादेयता – पं0 दीनदयाल जी भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक थे इसलिये उसी के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था की बात कहते थे। उनके द्वारा प्रतिपादित विद्यालय सम्बन्धी विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने गुरुगृह में रहकर व्यवस्था पूर्वक बालकों को शिक्षित करने की बात कही है। वर्तमान में आवासीय शिक्षा उसका ही एक प्रतिमान है परन्तु आवासीय शिक्षा के स्वरूप में भारतीयता की झलक व भारतीय सभ्यता व संस्कृति की छाप होना आज की माँग है। लोंगो में आवासीय शिक्षा को लेकर जागरूकता आई है परन्तु उसके सही संगठन व व्यवस्था का होना आज के लिये आवश्यक शर्त है। दीनदयाल जी ने विद्यालय में पूर्णतया व्यवस्थित और सांस्कृतिक प्रभाव को स्वीकार किया जो वर्तमान में उपयोगी है।

शिक्षा के अन्य पक्षों की उपादेयता –

भाषा – पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को ही स्वीकार किया है साथ ही उन्होंने वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान के लिये अंग्रेजी भाषा व साहित्य के ज्ञान के लिये क्षेत्रीय भाषा को महत्व दिया है। आज के सन्दर्भ में उपाध्याय जी के भाषा सम्बन्धी विचार उपयुक्त व उपयोगी दिखाई देते हैं क्योंकि वर्तमान में भाषा को लेकर राष्ट्र में अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं, भाषावाद के चलते लोंगो में परस्पर विचार वैमनस्य उत्पन्न हो रहा है जिसको दूर करने की ओर सफलता पूर्वक शैक्षिक व्यवस्था को चलाये रखने और राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिये शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को स्वीकार किया जाना चाहिये साथ ही त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत राष्ट्रीय विकास हेतु विदेशी भाषा (अंग्रेजी) व क्षेत्रीय भाषा को महत्व दिया जाना चाहिये।

जनशिक्षा – पण्डित जी जनशिक्षा के प्रबल समर्थक थे उन्होंने जनशिक्षा के महत्व को स्वीकार किया और अपने विचार दिये कि लोकतन्त्रात्मक प्रणाली को सुचारू रूप से चलाये रखने के लिये जनमानस को शिक्षित होना अनिवार्य है तथा सामान्य बच्चों, युवकों व प्रौढ़ों को उनके स्तर पर आकर शिक्षित करने के पक्षधर थे। उन्होंने माना कि जनशिक्षा के द्वारा ही सामान्य जनमानस को कुशल लोकतन्त्र के लिये तैयार किया जा सकता है। आज के सन्दर्भ में जन शिक्षा का महत्व सभी क्षेत्रों में है जिसके लिये सरकार ने विभिन्न कार्यक्रम यथा– सर्वशिक्षा अभियान, प्रौढ़ शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि शिक्षा आदि का विकास किया है परन्तु वर्तमान सन्दर्भ में देश में फैली विभिन्न समस्याओं से निपटने के लिये सामान्य जनमानस की शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है तभी राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। अतः विभिन्न संचार साधनों व सरकार के द्वारा चलाये कार्यक्रमों को जनशिक्षा के लिये प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दीनदयाल जी के जनशिक्षा सम्बन्धी विचारों का अनुसरण करना आवश्यक है तथा उपयोगी है। उनकी जनशिक्षा का उद्देश्य भारतीय परिस्थितियों की समस्याओं कोा समझने व दूर करने में सफल व सक्षम है।

स्त्रीशिक्षा – उपाध्याय जी स्त्रियों एवं पुरूषों को समान समझते थे और स्त्रियों को पुरूषों की भाँति उनकी रुचि, योग्यता एवं आवश्यकता के अनुसार शिक्षा प्राप्त कराने के पक्षधर थे अतः उन्होंने स्त्रियों को भी शिक्षित करने की बात को अनिवार्य रूप से स्वीकार की है इन्होंने स्पष्ट किया है कि जब तक हम नारी को शिक्षित नहीं करते तब तक समाज को शिक्षित नहीं कर सकते और जब तक समाज को शिक्षित नहीं करते तब तक समाज अथवा राष्ट्र का विकास नही कर सकते। इस प्रकार दीनदयाल जी का मानना था कि नारियों को शिक्षित किया जाना चाहिये जिससे वह समाज व राष्ट्र में सहयोग प्रदान कर सकें। आज के सन्दर्भ में महिलाओं को शिक्षित करने की उनकी विचारधारा अनुकरणीय है क्योंकि आज स्त्रियाँ प्रत्येक क्षेत्र में आगे आ रही हैं

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 1, Issue 2, September 2021
Impact Factor: 5.731

और समाज व राष्ट्र के विकास के लिए सहयोग प्रदान कर रही है। सरकार व शैक्षिक संगठनों को इस ओर और अधिक कार्य करने व नीतियाँ बनानी चाहिये क्योंकि महिलायें जो देश की लगभग आधी जनसंख्या हैं वह शिक्षा के अभाव में राष्ट्रीय कल्याण की भागीदार नही बन पाती। इसलिए पण्डित जी ने देश के समग्र कल्याण हेतु महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने की जोरदार सिफारिश की है जो आज के परिप्रेक्ष्य में बहुत ही उपयोगी एवं कल्याणकारी है।

व्यवसायिक शिक्षा – आज भारत को कई आर्थिक, सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहा है जैसे बेकारी, गरीबी, अकाल, बेरोजगारी आदि अतः शिक्षा का व्यावसायीकरण अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि केवल इसी प्रकार की शिक्षा से ही हम इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में दीनदयाल जी के व्यासायिक विचार अनुकरणीय है क्योंकि उन्होंने व्यावसायिक शिक्षण, राष्ट्र के आर्थिक विकास को दृष्टिगत रखते हुये शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की है। इसके साथ ही वे शिक्षा के व्यावसायीकरण के कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक संचालन करने के पक्षधर थे। आज के सन्दर्भ में दीनदयाल जी के छोटे व कुटीर उद्योग पर आधारित व्यावसायिक शिक्षा अपनाने योग्य है और लोंगो में श्रम की महत्ता तथा स्वरोजगार परक व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता को अपनाने की आवश्यकता है। अतः उनके विचारों को वर्तमान सन्दर्भ में अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है जिससे देश में फैली आर्थिक विषमता व विकराल बेरोजगारी की समस्याओं से निजात पाई जा सके।

धार्मिक शिक्षा – भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है यद्यपि भारत में कोई भी राज्य धर्म नहीं है परन्तु फिर भी विभिन्न धार्मिक विचार शिक्षा के उद्देश्यों को प्रभावित करते हैं। भारत में विभिन्न धर्म हैं परन्तु मानव धर्म को सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त है अतः शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करना निश्चित किया गया है। आज भारत के सामने यहां के नागरिको में पाये जाने वाले धार्मिक भेदभाव, धार्मिक तनाव, धर्म के आधार पर होने वाले झगडे एक बहुत बडी समस्या के रूप में विद्यमान है इस समस्या हल का पण्डित जी के दार्शनिक विचारो को शिक्षा में अपना कर ढूंढा जा सकता है क्योंकि आज के विद्यार्थी कल के नागरिक होते है अतः उनको भावी नागरिको के रूप में शिक्षित किया जाये तथा पण्डित जी के एकात्म मानवतावाद और मानव धर्म को शिक्षा के पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाकर शिक्षा द्वारा विद्यार्थियो में आपसी सहयोग, सौहार्द्र व परस्पर एकात्मकता के विचार विकसित किये जाये पाठ्क्रम मे धार्मिक शिक्षा किसी धर्म विशेष से सम्बन्धित न होकर समस्त मानव जाति अथवा मानव धर्म से सम्बन्धित होनी चाहिये जैसा कि पण्डित जी के विचार है अतः आज की परिप्रेक्ष्य में उनके धार्मिक शिक्षा सम्बन्धी विचार अनुकरणीय हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्द:1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- देवधर, विश्वनाथ नारायण:1987, प्रथम संस्करण ,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन", खण्ड–7 (व्यक्ति दर्शन), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- गुप्त, तनसुखराम:2005, प्रथम संस्करण,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय महाप्रस्थान", सूर्य भारती प्रकाशन,नई दिल्ली–110006
- गर्ग, पंकज कुमार:2003, (सित0–अक्टू0),अंक–55,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0), मेरठ–250001
- गर्ग ,पंकज कुमार:2005, (सित0–अक्टू0),अंक–66,,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0), मेरठ–250001

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 1, Issue 2, September 2021
Impact Factor: 5.731

- गर्ग, पंकज कुमार:2005, (नव0–दिस0),अंक–67,,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0), मेरठ–250001
- गर्ग, पंकज कुमार:2006, (जन0–फर0),अंक–68,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान(रजि0), मेरठ–250001
- गर्ग, पंकज कुमार:2006 ,(मार्च–अप्रैल0),अंक–69,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान(रजि0), मेरठ–250001
- जोग, बलवन्त नारायण:1991, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन",खण्ड–6, सुरुचि प्रकाशन,झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- कुलकर्णी, शरद अनन्त:1991, द्वितीय संस्करण ,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन", खण्ड–4,सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- शर्मा, हरीदत्त:2005 ,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय (राष्ट्रीय जीवन माला)", डायमण्ड पाकेट बुक्स, एक्स–30 ओखला फेज सैकेण्ड, नई दिल्ली
- शर्मा, महेश चन्द्र:2004, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय" सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001
- शर्मा रामनाथ व शर्मा राजेन्द्र कुमार:2006, द्वितीय संस्करण, "शिक्षा दर्शन", एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरर्स, बी–2,विशाल एन्क्लेव,नईदिल्ली–110027
- ठेंगड़ी दत्तोपन्त:1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन", खण्ड–1
- (तत्वजिज्ञासा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055 तिवारी, केदारनाथ:2006, पंचम् संस्करण, "तत्व मीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा", मोतीलाल बनारसीदास, 41,यू0ए0बंग्ला रोड,जवाहरनगर, दिल्ली–110077
- उपाध्याय,दीनदयाल:2007, दशम् संस्करण, "राष्ट्र जीवन की दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
- उपाध्याय,दीनदयाल:2007, अष्टम् संस्करण, "राष्ट्र चिन्तन", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
- उपाध्याय, दीनदयाल:2004, नवम् संस्करण, "एकात्म मानववाद", जागृति प्रकाशन,नोएडा–201301
- उपाध्याय, दीनदयाल:1991, द्वितीय संस्करण, "पोलिटिकल डायरी" सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055

उपाध्याय, दीनदयाल:2006, चतुर्थ संस्करण, "भारतीय अर्थ–नीति, विकास की एक दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004